

B.Ed – 2nd Year

Pedagogy of Biological Science

Course- 7 (b)

Lecture - 40

Nakul Sah

Assistant Professor

समस्या समाधान विधि

Rest of lecture 39

2.परिकल्पना का बनाना

समस्या को पहचानने और परिभाषितकरण करने के पश्चात् स्वयं ही परिकल्पना निर्माण करना चाहिए। परिकल्पना अर्थात् समस्या का सम्भावित समाधान करना। पूर्व ज्ञान, एकत्रित सूचना एवं जानकारी के आधार पर समस्या के सम्भव समाधानों की सूची तैयार की जाती है। इनमें से जो सम्भावित समाधान समस्या के सोचने और विचारने उपरान्त बिल्कुल ही गलत लगते हैं उन्हें छोड़कर अतिरिक्त को आगे जाँच के लिए ले सकते हैं।

3.परिकल्पना की जाँच

परिकल्पना निर्माण के बाद विद्यार्थियों को यह भी निर्णय लेना होता है कि कौन-सी विधि से वह परिकल्पनाओं की जांच करेगा, क्या-क्या उपकरण, साधन और विधि का उपयोग इस समस्या के समाधान के लिए करेगा। जब यह सब निश्चित हो जाता है तो वह उसे क्रियान्वित करता है। इस क्रियान्वयन में शिक्षक को विद्यार्थियों की सहायता करनी चाहिए। विद्यार्थियों को शिक्षक के संरक्षण में सही डाटा को सावधानीपूर्वक एकत्रीकरण एवं संगठन करना होता है। इसके पश्चात डाटा का अन्वेषण करना होता है।

4.परिणाम का व्याख्याकरण

आँकड़े का अन्वेषण होने के पश्चात् परिणाम का अनुमानिकरण प्रारम्भ हो जाता है। इस चरण पर विद्यार्थियों को शिक्षकों का भरपूर मार्गदर्शन प्राप्त होना

चाहिए। आँकड़ों के व्याख्याकरण में तकनीक का सही प्रकार से उपयोग होना चाहिए। आँकड़ों के व्याख्याकरण के लिए चार्ट, ग्राफ, टेबल इत्यादि का उपयोग करना चाहिए जिससे व्याख्या स्पष्ट रूप से समझ आए।

5. निष्कर्ष निकालना

विद्यार्थियों से कहा जाता है कि अब जो उन्होंने सम्भावित समाधान लिखे थे या माने थे, उनके साथ अपने प्राप्त परिणाम का मिलान करें और फिर निष्कर्ष पर पहुँचे कि परिकल्पनाएं सही ली गई थी या गलत। इस तरह निष्कर्ष तक पहुँचा जाता है। निष्कर्ष प्राप्त परिणामों के आधार पर निकाले जाते हैं और उन्हें सरल, स्पष्ट और सटीक शब्दों में प्रस्तुत करना होता है। जो भी निष्कर्ष निकलकर सामने आता है उसे फिर लगभग वैसी ही परिस्थितियों में वैसी ही अन्य समस्याओं के हल के लिए उपयोग करके देखा जा सकता है। एक निष्कर्ष या समाधान, विज्ञान के अध्ययन या अन्वेषण में तभी सही निष्कर्ष समझा जाता है, जबकि वह सभी एक जैसी समस्याओं या घटनाओं को समझने या उनके कारणों की व्याख्या करने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता हो, समस्या समाधान का उद्देश्य ऐसे निष्कर्ष निकालना ही है।

समस्या-समाधान विधि के लाभ

- ★ भावी जीवन में आने वाली समस्याओं को हल करने में मदद मिलती है, इसका परीक्षण उन्हें स्कूल से ही मिलना शुरू हो जाता है।
- ★ इस विधि से विद्यार्थी में तर्क तथा चिन्तन शक्ति का विकास होता है।
- ★ इस विधि द्वारा स्वाध्याय की आदत का विकास होता है।
- ★ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास छात्रों में होता है।
- ★ विद्यार्थी स्वयं सक्रिय रहते हैं, इसलिए अर्जित ज्ञान स्थायी हो जाता है।

★ इस विधि से उत्तरदायित्व, अनुशासन तथा दूरदर्शिता के गुणों का विकास होता है।

समस्या-समाधान विधि के दोष

★ इस विधि द्वारा पाठ्यक्रम के सभी प्रकरणों का शिक्षण नहीं किया जा सकता।

★ इस विधि में अधिक समय लगता है।

★ यह विधि निम्न कक्षाओं के लिए उपयुक्त नहीं है।

★ इस विधि द्वारा पाठ्यक्रम को निश्चित समय पर पूर्ण नहीं किया जा सकता है।

★★ *The End* ★★